E Content for student of Patliputra University
B.A.(Hons.) Part I Paper I
Subject - Political Science
Topic **Behaviouralism**

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Professor, Political science
R.P.S. College Mokama

राजनीति विज्ञान की अध्ययन पद्धति एवं प्रक्रिया के संदर्भ में व्यवहारवाद का उदय एक क्रांति के रूप में 1960 के दशक में हुआ। इसने केवल विधानात्मक, कानूनी, औपचारिक अध्ययन के विरुद्ध व्यावहारिक, आनुभविक, तथा वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर अध्ययन पर बल दिया। संस्थाओं के बजाय वैधानिक स्वरूप है, कानून क्या कहता है, क्या होना चाहिए, क्या उचित है क्या अनुचित आदि के स्थान पर व्यावहारिक कार्यप्रणाली, वास्तविकता के आधार पर चलने वाली प्रक्रिया एवं वैज्ञानिक तथा ~~संस्थागत~~ संरचनात्मक प्रणाली के आधार पर अध्ययन प्रक्रिया पर बल दिया जाता है। रॉबर्ट ए० डॉल के अनुसार, "व्यवहारवादी क्रांति परम्परागत राजनीतिक विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति असंतोष का परिणाम है, जिसका उद्देश्य राजनीति विज्ञान को अधिक वैज्ञानिक बनाना है।"

विचारधारा का विकास :- इस विचारधारा का विकास पिछली शताब्दी के प्रारम्भ से ही हो गया था। 1908 में ग्राहम वालास की पुस्तक "Human Nature in Politics" में राजनीति विज्ञान के अध्ययन में व्यक्ति की प्रकृति के प्रभाव के अध्ययन पर बल दिया। बेंटले ने अपनी पुस्तक The Process of Government में सरकार की प्रक्रिया के अध्ययन पर बल दिया। 1925 में चार्ल्स मेरियम ने अपनी पुस्तक, New Aspects of Politics में राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी एवं परिमाणात्मक अध्ययन की प्रेरणा दी।

इस अध्ययन पद्धति का विकास शिकागो में हुआ, इसलिए इसे "शिकागो सम्प्रदाय" की भी संज्ञा दी जाती है।

व्यवहारवाद का स्वरूप

कुछ विद्वानों ने व्यवहारवाद को एक मनोदशा या मनोवृत्ति बतलाया। कुछ ने इसे एक उपागम, एक चुनौती, एक अभिनवीकरण, एक सुधार आंदोलन, एक अनुसन्धान की प्रक्रिया आदि बतलाया। जिससे अस्पष्टता बनी रही। Kri K Patrick ने इसके स्वरूप को स्पष्टता प्रदान करने का प्रयास किया - उन्होंने इसकी निम्न विशेषताएँ बतलाई -

(1) इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि राजनीतिक अध्ययन और शोध कार्य में अध्ययन का मुख्य विषय वस्तु संस्थाएँ न होकर व्यक्ति होना चाहिए।

(2) यह सभी सामाजिक विज्ञानों को व्यवहारवादी विज्ञान के रूप में देखता है। इनमें एकता होनी चाहिए।

(3) यह तथ्यों के पर्यवेक्षण, वर्गीकरण और माप के लिए अधिक परिशुद्ध प्रविधियों - सांख्यिकीय या परीक्षणात्मक तकनीकों - के उपयोग पर बल देता है।

(4) यह राजनीति विज्ञान के लक्ष्य को एक व्यवस्थित आनुभविक सिद्धांत के रूप में परिभाषित करता है।

व्यवहारवाद के आधार - व्यवहारवाद के अधिकारी विद्वान डेविड ईस्टन ने व्यवहारवाद के निम्नलिखित आधारों का वर्णन किया है

(1) नियमन (Regularization) - व्यवहारवादियों के अनुसार राजनीतिक व्यवहार में सामान्य तत्व ढूंढे जा सकते हैं, जिन्हें सामान्यीकरण एवं सिद्धांत के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इनके आधार पर मानवीय व्यवहार की व्याख्या और भविष्य के लिए सम्भावनाएँ व्यक्त की जा सकती है।

(2) सत्यापन (Verification) - व्यवहारवादी अध्ययन पद्धति की एक विशेषता यह है कि मानवीय व्यवहार से संबंधित व्यक्ति

सामग्री का सत्यापन किया जाय।

(3) तकनीकी प्रयोग (Use of Techniques) – आधार सामग्री को प्राप्त करने एवं उनकी व्याख्या करने के साधनों को अध्ययनकर्ता द्वारा शुद्ध एवं परीक्षित करने की आवश्यकता है। इसके लिए अच्छे तकनीकों के प्रयोग की आवश्यकता है। जिससे प्राप्त निष्कर्ष प्रमाणित सिद्ध किये जा सकें।

(4) परिमाणीकरण (Quantification) – अध्ययन में प्राप्त समस्त सामग्री को यथासंभव आँकड़ों में व्यक्त करना चाहिए। आँकड़ों को Table के माध्यम से प्रस्तुत करने में तथ्य ज्यादा स्पष्ट होती है।

(5) मूल्य निरपेक्ष (Value free) – व्यवहारवादी अध्ययन के क्रम में मूल्य निरपेक्ष अर्थात मूल्यों के प्रति तटस्थता बनाये रखने का सुझाव देते हैं। जिससे अध्ययन की वास्तविकता पर मूल्यों का प्रभाव न पड़ सके।

(6) व्यवस्थापन्हीकरण (Systematization) – अध्ययन के सिद्धांत एवं अनुसंधान में प्राप्त जानकारियाँ क्रमबद्ध होना चाहिए। अनुसंधान के निष्कर्ष आँकड़ों के द्वारा क्रमबद्ध होना चाहिए। जिससे तथ्य स्पष्ट हो सकें।

(7) विशुद्ध ज्ञान (Pure science) – व्यवहारवाद का यह उद्देश्य है कि अध्ययन की पद्धति में उपर तकनीकी प्रयोगों एवं मूल्य निरपेक्षता का सहारा लिया जायेगा तो राजनीति विज्ञान में भी विज्ञान की तरह निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। तथा उसकी पुनः पुष्टि भी की जा सकती है। देखा जा सकता है कि तकनीकों के प्रयोग के आधार पर चुनाव में पूर्वानुमान लगाये जाते हैं। अन्य विज्ञानों की तरह राजनीति विज्ञान में भी Research matholog‍y का उपयोग किया जाता है।

(8) समग्रता (Integration) व्यवहारवादियों के अनुसार समस्त मानव व्यवहार एक ही पूर्ण इकाई है, उसका अध्ययन खंडों में नहीं किया जाना चाहिए। अतः मानव व्यवहारों से संबंधित अलग विषयों का अध्ययन पारस्पर संबद्धता

रूप में किया जाना चाहिए। फलस्वरूप आज अन्त-अनुशासनात्मक अध्ययन पर बल दिया जाता है।

निष्कर्ष

व्यवहारवाद "अनुभवात्मक वैज्ञानिकता" और "अन्त: अनुशासनात्मक दृष्टिकोण" के आधार पर लोकप्रियता प्राप्त की है। किन्तु मूल्य निरपेक्षता की दृष्टि से आलोचना का सामना भी करना पड़ा है। व्यवहारवाद के प्रणेता डेविड ईस्टन ने स्वयं 1969 में उत्तर व्यवहारवाद (Post Behaviouralism) का सिद्धांत दिया। इसके आधार पर स्वीकार किया गया कि राजनीतिविज्ञान में अनुभविक अध्ययन एवं परिशुद्ध परिणाम देने वाली पद्धतियों को अपनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। साथ ही साथ राजनीतिक जीवन की समस्याओं की जटिलताओं को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। अर्थात अध्ययन में मूल्यों की उपेक्षा भी संभव नहीं है।

Scanned with CamScanner